SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj

''माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालाकों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययनः राजस्थान के सीकर जिले के संदर्भ में ''

डॉ. भाबग्राही प्रधान[1*] सुरेन्द्र कुमार[2]

१.शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, (शिक्षा विभाग) जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनू राजस्थान

२.शोध छात्र, (शिक्षा विभाग) जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनू राजस्थान

*Corresponding author Email- bpjvbu@gmail.com

प्रस्तावना

शिक्षा समग्र जीवन के उन्नयन की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह मानव समाज के सर्वांगीण विकास में प्राण फूंकती है और जीवन के क्रम को समुन्नत एवं सर्वहिताय बनाती है। जीवन को सरस सुमधुर एवं सर्वोपयोगी बनाने में शिक्षा महत्ती भूमिका निभाती है। सार रूप में अगर कहें तो कहना होगा कि शिक्षा ही जीवन है। गीता के उद्घोष ''सा विद्या या विमुक्तये'' की प्रासंगिकता में शिक्षा जीवन को जीने योग्य बनाती है तथा समस्त बंधनों से विमुक्त करती है। समग्र की प्राप्ति एवं साथ ही साथ सर्व से मुक्त होना यही जीवन को आनन्द पूर्ण बनाता है।

विभिन्न क्षमताओं के विकास के लिए विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों में बालक की सहभागिता आवश्यक है। 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार ज्ञान के बहुत सारे स्वरूप हैं और विभिन्न स्थानो पर ये प्राप्त होते हैं। सूचनाओं के माध्यम से, बौद्धिकता और अनुभव से प्राप्त होते हैं शैक्षिक संस्थाओं, अध्यापकों और पुस्तकालयों के माध्यम से प्राप्त होते हैं तथा बहुत से काम करने वालों, कला चित्रण से, दुकानों से, दस्तकारों से ज्ञान प्राप्त होता है हमारे वातावरण में ज्ञान का अपार भण्डार छिपा होता है इसलिए विद्यार्थियों का कई तरह से मूल्यांकन किया जाता है, इसलिए उनका सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाता है।शिक्षा को प्रायः दो भागोंमें विभाजित किया गया है –अनौपचारिक और औपचारिक। अनौपचारिक शिक्षा एक बालक को अपने परिवार से मिलती है। माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्य अपने–अपने सांस्कृतिक व्यवहारों से बालक में सांस्कृतिक गुण उत्पन्न करते हैं और व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

महात्मा गांधी ने 13 जुलाई 1937 के 'हरिजन' मे शिक्षा के संबंध मे लिखा है–

राष्ट्र के रूप में हम शिक्षा में इतने पिछडे हुए है कि यदि हमने शिक्षा का यह कार्यक्रम धन पर आधारित किया, तो हम राष्ट्र के प्रति शिक्षा के अपने कर्तव्य को इस एक पीढ़ी में एक निश्चित समय में पूर्ण करने की आशा नही कर सकते हैं। अतः मैनें यह प्रस्ताव करने का साहस किया है कि शिक्षा

आत्म–निर्भर होनी चाहिए। शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मुनष्य में शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों के सर्वोत्तम सर्वांगीण विकास से है। अतः मैं बालक की शिक्षा का प्रारम्भ इसे एक उपयोगी हस्त शिल्प सिखाकर और जिस समय से यह अपनी शिक्षा आरम्भ करना चाहता है यदि राज्य स्कूलों में निर्मित की जाने वाली वस्तुओं को खरीद ले, तो प्रत्येक स्कूल को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

शारीरिक व मानसिक रूप से असामान्य बालकों को दिव्यांगकी श्रेणी में रखा जाता है। जो श्रेणियों निम्न प्रकार से है।

संवेदिक रूप से दिव्यांग

1. दृष्टि दिव्यांग
2. श्रवण दिव्यांग

* गतिय रूप से दिव्यांग
* बहुल दिव्यांग

  शारीरिक रूप से भिन्न

  मानसिक रूप से भिन्न
* संवेगिक रूप से परेशान बालक
* असमायोजित बालक/सामाजिक रूप से विचलित
* वंचित बालक
* समस्यात्मक बालक
* बाल–अपराधी
* माता–पिता द्वारा तिरस्कृत बालक

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान समय में शिक्षा के गिरते स्तर को देखते हुए अनुसंधानकर्ता के मन में इस समस्या को जानने की जिज्ञासा हुई और पाया कि अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन आदि अनेक कारण शिक्षा के इस पिछड़ते हुए स्तर के लिए जिम्मेदार है। व्यक्ति की बुद्धिपर उनके शारीरिक स्तर, मानसिक आयु का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

प्रायः अभिभावको द्वारा यह माना जाता है कि गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययन अच्छा कराया जाता है तथा वहाँ के बच्चों की बुद्धि तीव्र होती है अपेक्षाकृत सरकारी विद्यालयों के बच्चों के अतः इस धारणा की सच्चाई का पता लगाने के लिये आवष्यक है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों कि अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन किया जाये साथ ही उनकी अध्ययन आदतों की जानकारी भी प्राप्त करना आवष्यक है तभी हम किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकते है।

दिव्यांग बालक–बालिकाओं कि अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन कि जानकारी प्राप्त हो जाने पर ही अध्यापक एवं अभिभावक उनके अनुरूप सुधार कर सकेंगे जिससे उनकी अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन बढ़ाकर शैक्षिक विकास में सहायता मिलेगी।

अतः इन बातों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने उपयुक्त विषय को शोध हेतु चुना है।

समस्या कथन

''माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''

समस्या का औचित्य

शोधकर्ता शोध कार्य सीकर जिले में करने का विचार इस लिए किया गया क्योकि यह वर्तमान में शिक्षा नगरी हैं। यहॉ राज्य के विभिन्न जिलों से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते है। इसलिए शोधकर्ता ने यह विचार किया कि सीकर जिले के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य बालकों एवं दिव्यागं बालकों की अध्ययन आदतों, सृजानात्मकता एवं समायोजन में क्या अन्तर पाया जाता है यह अन्तर जानने के लिए ही शोधकर्ता इस अध्ययन पर शोध कार्य करना चाहता है। माध्यमिक स्तर के कक्षा 10 के दिव्यांग बालकों की अध्यन आदतों, सृजानात्मक एवं समायोजन को ज्ञात करने हेतु शाधकर्ता के द्वारा प्रस्तुत माध्यमिक कक्षा दसवीं का चयन किया गया।

दिव्यांग बालकों में कहीं न कहीं सृजनात्मकता का रूप प्रतीत होता है, परन्तु क्या अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का कोई संबंध है यही ज्ञात करने हेतु प्रस्तुत अध्ययन पर शोधकर्ता द्वारा शोध किया जायेगा।

प्रस्तुत षोध का न्यादर्ष

शोधकर्ता ने अपने अनुसंधान कार्य को करने के लिए न्यादर्ष के रूप में सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय एवं गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 200 दिव्यांग विद्यार्थियों को समूह

या गुच्छ न्यादर्ष प्रतिदर्ष चयन द्वारा चुना जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्व करते है। इन 200 विद्यार्थियों में 100 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय के तथा 100 गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत है।

सारणी संख्या–1.1

न्यादर्श

क्र.सं.	विद्यालय	कक्षा	दिव्यांग बालक	दिव्यांग बालिकाएं	कुल
1	स्रकारी	X	50	50	100
2	गैर सरकारी	X	50	50	100
कुल			100	100	200

अध्ययन के उद्देश्य

माध्यमिक स्तरीय दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन करने के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक बालिकाओं की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक बालिकाओं की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4. सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5. सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6. सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1 यह अनुसंधान कार्य केवल राजस्थान राज्य के सीकर जिले में स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय व गैर राजकीय माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों तक ही सीमित हैं।

2 शोध हेतु शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

3 इस शोध में माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 के दिव्यांग विद्यार्थियों का चयन किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

1. अध्ययन आदतों का उपकरण – एम.एन. पालसाने, अनुराधा शर्मा
नेशनल सॉयकोलॉजिकल कॉरपोरेशन
4/230, कचेरी घाट, आगरा (उ.प्र)
282004, भारत

2. सृजनात्मकता– डॉ. बॉकर मेहदी
प्रोफेसर ऑफ एजुकेशन
राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली, 110016

3. समायोजन– ए.के.पी. सिन्हा
डॉ. आर.पी.सिंह
नेशनल सॉयकोलॉजिकल कॉरपोरेशन
यू.जी.–1, निर्मल हाईट्स, आगरा (उ.प्र)

परिकल्पना–4.1

सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।तालिका 4.1

मध्यमान, मानक विलचन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, माध्यमानों का अन्तर, स्वतन्त्रता का अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

माध्यमिक स्तर के दिव्यांग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर की मानक त्रुटि (S.Ed)	मध्यमानों का अन्तर (D)	स्वतन्त्रता का अशं (df)	आलोचनात्मक अनुपात (C.R.)
बालक	100	103.1	19.5	2.83	22.1	198	7.80
बालिका	100	125.2	20.56				

* 0-05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के दिव्यांग बालक व बालिकाओं की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 103.1 व 125.2 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 19.5 व 20.56 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 2.83 तथा मध्यमानों का अन्तर 22.1 हैं। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात 7.80 है। जो कि 198 स्वतन्त्रता के अंश हेतु 0.05 (1.65) एवं 0.01(2.33) सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से अधिक है। अतः परिकल्पना–4.1 अस्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक व बालिकाओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

चूँकि माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं का का मध्यमान (125.2) माध्यमिक विद्यालयों के दिव्यांग बालकों के मध्यमान (103.1) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं में माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालकों की तुलना में अधिक अध्ययन आदत पायी जाती है।

ग्राफ संख्या –4.1

सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का ग्राफीय प्रदर्शन

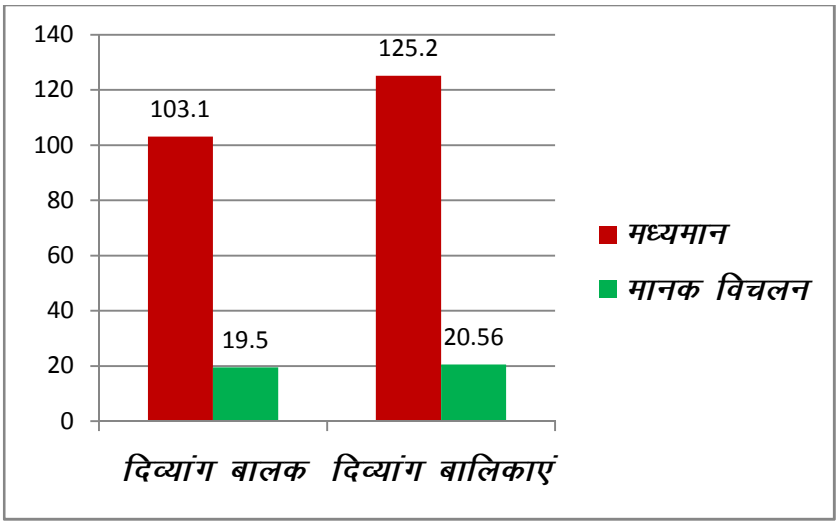

परिकल्पना– 4.2

सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 4.2

मध्यमान, मानक विलचन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, माध्यमानों का अन्तर, स्वतन्त्रता का अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

विद्यालयों के प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर की मानक त्रुटि (S.Ed)	मध्यमानों का अन्तर (D)	स्वतन्त्रता का अशं (df)	आलोचनात्मक अनुपात (C.R.)
सरकारी	100	22.65	6.55	0.83	2.35	198	2.83
गैर सरकारी	100	25	5.3				

* 0-05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 22.65 व 25 हैं। दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 6.55 व 5.3 है। दानों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.83 तथा मध्यमानों का अन्तर 2.35 हैं। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात 2.83 हैं जो कि 198 स्वतन्त्रता के अंश हेतु 0.05 (1.65) एवं 0.01(2.33) सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से अधिक हैं। अतः परिकल्पना–4.2 अस्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

चूँकि गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों का मध्यमान (25) सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्यमान (22.65) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों में सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में अध्ययन आदतें अधिक पायी जाती हैं।

ग्राफ संख्या –4.2

सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का ग्राफीय प्रदर्शन

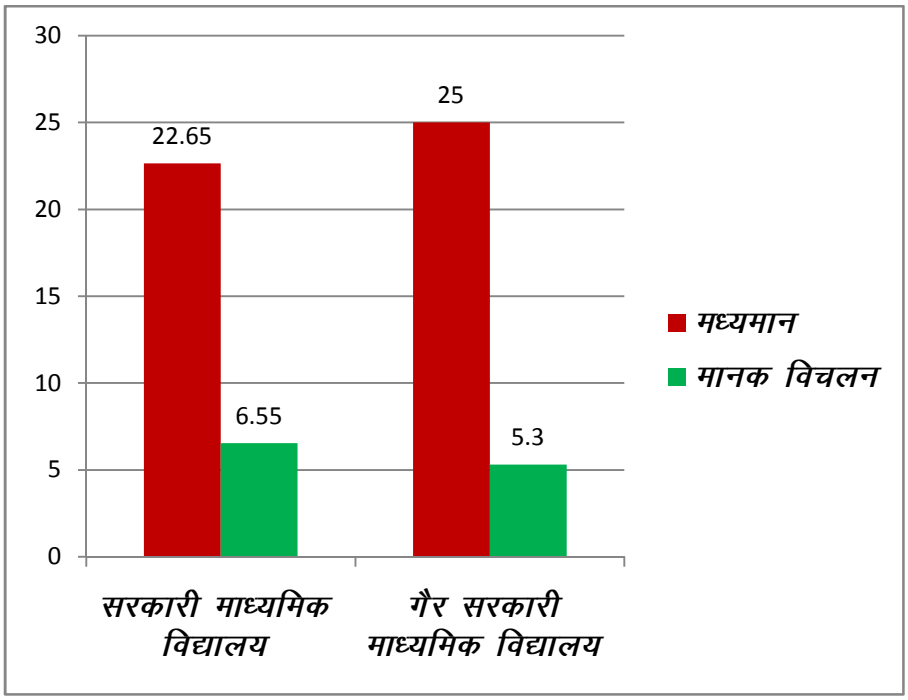

परिकल्पना–4.3

सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।तालिका 4.3

मध्यमान, मानक विलचन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, माध्यमानों का अन्तर, स्वतन्त्रता का अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

माध्यमिक स्तर के दिव्यांग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर की मानक त्रुटि (S.Ed)	मध्यमानों का अन्तर (D)	स्वतन्त्रता का अशं (df)	आलोचनात्मक अनुपात (C.R.)
बालक	100	174.5	21.9	3.23	0.2	198	0.06
बालिका	100	174.7	23.8				

* 0-05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के दिव्यांग बालक व बालिकाओं की सृजनात्मकता के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 174.5 व 174.7 हैं तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 21.9 व 23.8 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 3.23 तथा मध्यमानों का अन्तर 0.2 हैं। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.06 हैं जो कि 198 स्वतन्त्रता के अंश हेतु 0.05 (1.65) एवं 0.01(2.33) सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान

1.97 से कम हैं अतः परिकल्पना–4.3 स्वीकृत होती है अर्थात् माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक व बालिकाओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

चूँकि माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं का मध्यमान (174.5) व छात्राओं के मध्यमान (174.7) में कोई विशेष अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर पाया गया हैं वह संयोग वंश हैं। यह निष्कर्ष निकलता हैं कि माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं में माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालकों की सृजनात्मकता समान होती हैं उसमें कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता है।

ग्राफ संख्या –4.3

सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का ग्राफीय प्रदर्शन

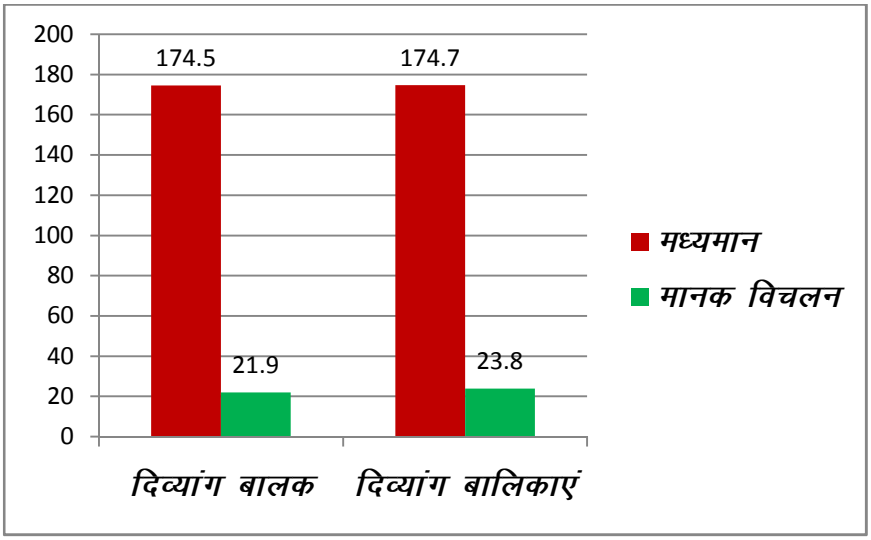

परिकल्पना– 4.4

सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 4.4

मध्यमान, मानक विलचन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, माध्यमानों का अन्तर, स्वतन्त्रता का अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

विद्यालयों के प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर की मानक त्रुटि (S.Ed)	मध्यमानों का अन्तर (D)	स्वतन्त्रता का अशं (df)	आलोचनात्मक अनुपात (C.R.)
सरकारी	100	28.40	7.25	0.95	2.20	198	2.92
गैर सरकारी	100	30.2	5.6				

* 0-05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 28.40 व 30.2 हैं। दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 7.25 व 5.6 है। दानों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.95 तथा मध्यमानों का अन्तर 2.20 हैं। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात 2.92 हैं जो कि 198 स्वतन्त्रता के अंश हेतु 0.05 (1.65) एवं 0.01(2.33) सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से अधिक हैं। अतः परिकल्पना–4.4 अस्वीकृत होती है। अर्थात् माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

चूँकि गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों का मध्यमान (30.2) सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्यमान (28.40) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों में सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में सृजनात्मकता अधिक पायी जाती हैं।

ग्राफ संख्या –4.4

सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का ग्राफीय प्रदर्शन

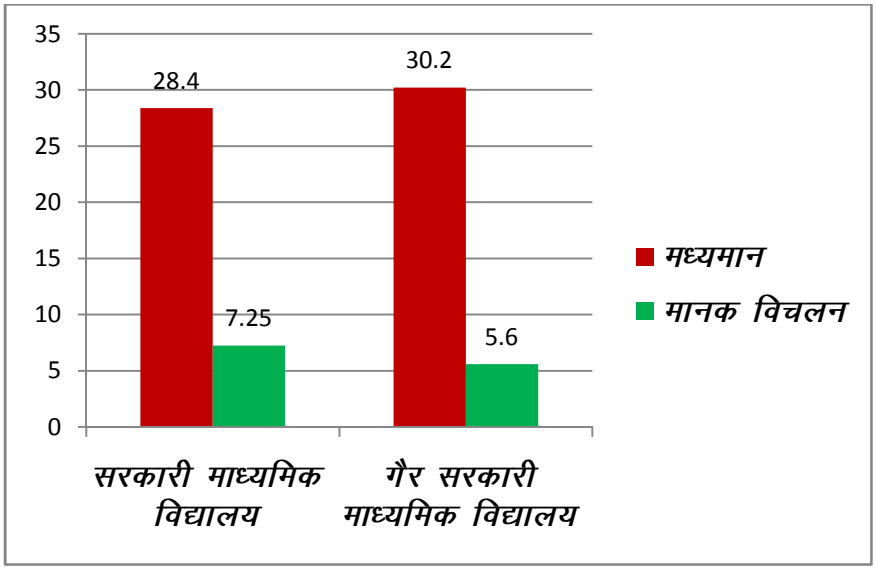

परिकल्पना–4.5

सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 4.5

मध्यमान, मानक विलचन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, माध्यमानों का अन्तर, स्वतन्त्रता का अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

माध्यमिक स्तर के दिव्यांग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर की मानक त्रुटि (S.Ed)	मध्यमानों का अन्तर (D)	स्वतन्त्रता का अशं (df)	आलोचनात्मक अनुपात (C.R.)
बलक	100	177.4	21.5	2.91	5.6	198	1.92
बलिका	100	171.8	19.7				

* 0-05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक व बालिकाओं के समायोजन कें प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 177.4 व 171.8 हैं तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 21.5 व 19.7 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 2.91 तथा मध्यमानों का अन्तर 5.6 हैं। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात 1.92 हैं जो कि 198 स्वतन्त्रता के अंश हेतु 0.05 (1.65) एवं 0.01(2.33) सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से कम हैं अतः परिकल्पना–4.5 स्वीकृत होती हैं अर्थात् माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के प्राप्ताकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। दोनों में समान प्रवृति की अध्ययन आदतें पायी जाती है।

चूँकि माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक व बालिकाओं के समायोजन के मध्यमानों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर पाया गया हैं वह संयोग वंश हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि माध्यमिक स्तर के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक व बालिकाओं के समायोजन समान होती हैं उसमें कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता है।

ग्राफ संख्या –4.5

सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन का ग्राफीय प्रदर्शन

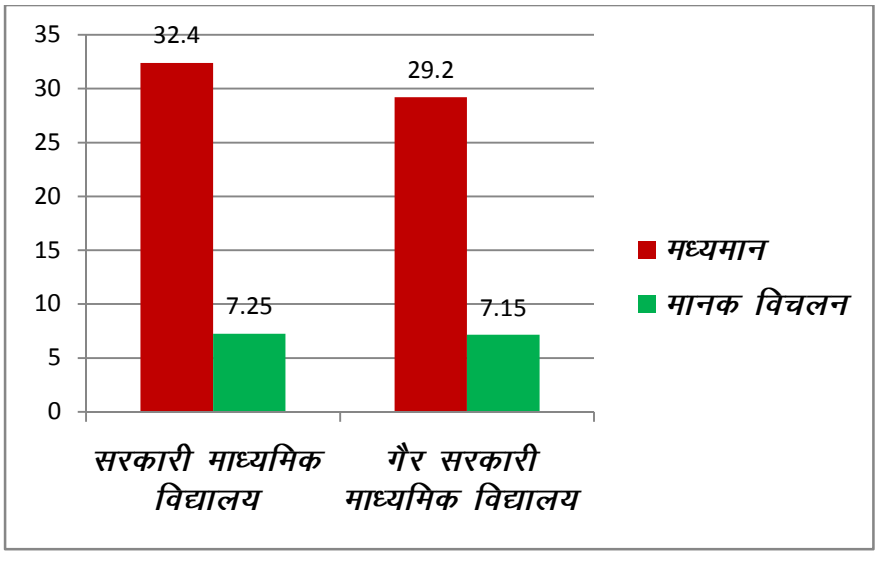

परिकल्पना– 4.6

सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका 4.6

मध्यमान, मानक विलचन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, माध्यमानों का अन्तर, स्वतन्त्रता का अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

विद्यालयों के प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	अन्तर की मानक त्रुटि (S.Ed)	मध्यमानों का अन्तर (D)	स्वतन्त्रता का अशं (df)	आलोचनात्मक अनुपात (C.R.)
स्रकारी	100	32.4	7.25	1.01	3.2	198	3.16
गैर सरकारी	100	29.2	7.15				

* 0-05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 32.4 व 29.2 हैं तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 7.25 व 7.15 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.01 तथा मध्यमानों का अन्तर 3.2 हैं। दोनों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात 3.16 हैं जो कि 198 स्वतन्त्रता के अंश हेतु 0.05 (1.65) एवं 0.01(2.33) सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से अधिक हैं अतः परिकल्पना–4.6 अस्वीकृत होती हैं अर्थात् माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

चूँकि सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों का मध्यमान (32.4) एवं गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्यमान (29.2) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों में गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में समायोजन अधिक पाया जाता हैं।

ग्राफ संख्या –4.6

सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन का ग्राफीय प्रदर्शन

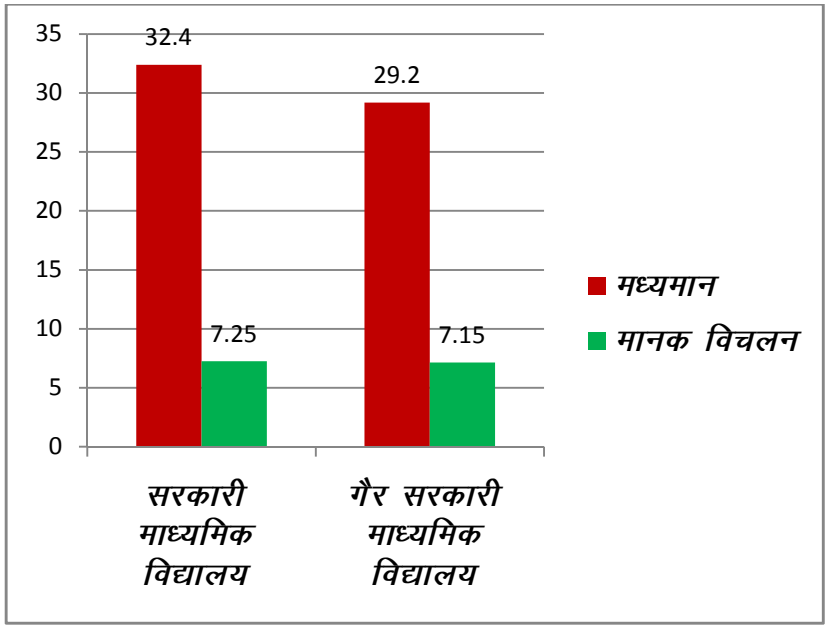

शोध के निष्कर्ष

1.सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि–

माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं का का मध्यमान (125.2) माध्यमिक विद्यालयों के दिव्यांग बालकों के मध्यमान (103.1) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं में माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालकों की तुलना में अधिक अध्ययन आदत पायी जाती है।

2.सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि –

सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों का मध्यमान (25) सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्यमान (22.65) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों में सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में अध्ययन आदतें अधिक पायी जाती हैं।

3.सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि –

माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं का मध्यमान (174.5) व छात्राओं के मध्यमान (174.7) में कोई विशेष अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर पाया गया हैं वह संयोग वंश हैं। यह निष्कर्ष निकलता हैं कि माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालिकाओं में माध्यमिक विद्यालय के दिव्यांग बालकों की सृजनात्मकता समान होती हैं उसमें कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता है।

4.सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि –

गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों का मध्यमान (30.2) सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्यमान (28.40) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों में सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में सृजनात्मकता अधिक पायी जाती हैं।

5.सीकर जिले में लिंग भेद (बालक व बालिकाएं) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि –

माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक व बालिकाओं के समायोजन के मध्यमानों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर पाया गया हैं वह संयोग वंश हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि माध्यमिक स्तर के माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालक व बालिकाओं के समायोजन समान होती हैं उसमें कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता है।

6.सीकर जिले में विद्यालय की प्रकृति (राजकीय व गैर राजकीय) के आधार पर माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि –

सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों का मध्यमान (32.4) एवं गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्यमान (29.2) से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों में गैर सरकारी विद्यालय के दिव्यांग विद्यार्थियों की तुलना में समायोजन अधिक पाया जाता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, वी. एवं अस्थाना, एस. (2005), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 480–507

2. कपिल, एच.के. (2005), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 555–585

3. कुलश्रेष्ठ, एस. पी. (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, 326–340

4. नागर, जे. (2010) बालक के मानसिक स्वास्थ्य में अध्यापक की भूमिका, 'शिविरा पत्रिका, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, बीकानेर।

5. पाठक, पी. डी. (2005), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 22–29

6. भोजक, आर. (2006), माध्यमिक स्तर पर सामान्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन, नई शिक्षा, 12, उगमपथ, बनीपार्क, जयपुर, 20–24

7. भटनागर, एस. (2004), शिक्षा मनोविज्ञान तथा शिक्षण शास्त्र, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 142 –155

8. भटनागर, ए. बी. एवं भटनागर, एम. (2007), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, 124–143

9. रायजादा, बी. एस. (1997), शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी, जयपुर 16–27

10. वर्मा, आर. के. (2005), नवाचार, प्राथमिक शिक्षक, नई दिल्ली, 46–51

11. वर्मा, ए.के. (2006), अधिगम का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, रवि प्रकाशन, वाराणसी, 293–306

12. शर्मा, आर. ए. (2007), अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार, आर. लाल बुक डिपों, मेरठ, 206–208

13. शर्मा, आर. ए. (2008), शिक्षा अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 124–1 97.

14. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle